International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 12 No.2 Nov-Dec 2024

गोदान में चित्रित भारतीय कृषक समाज की समस्या

प्रा.डॉ.जयश्री बाबासाहेब काशीद
हिंदी विभाग
डॉ. गणपतराव देशमुख महाविदयालय, सांगोला
Corresponding Author: प्रा.डॉ.जयश्री बाबासाहेब काशीद
DOI- 10.5281/zenodo.14551624

प्रस्तावना :

प्रेमचन्दजी की अंतिम और औपन्यासिक कृति 'गोदान' का प्रकाशन सन १९३६ में हुआ। केवल प्रेमचन्दजी के उपन्यास साहित्य में ही नहीं वरन संपूर्ण हिंदी उपन्यास साहित्य में यह कृति सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। 'गोदान' को एक महाकाव्यात्मक उपन्यास कहा जाता है। प्रेमचन्दजी ने 'गोदान' में होरी के व्दारा किसान जीवन की संघर्षगाथा को प्रस्तुत किया है। भारतीय किसानों की सबसे ज्वलंत समस्या ऋण की है। भारतीय किसान ऋण के बोझ के नीचे दब गया है। डॉ. रामविलास शर्मा के शब्दों में **'गोदान' की मूल समस्या शोषित तथा उत्पीडित कृषक के ऋण की समस्या है।"** उनका कथन योग्य प्रतीत होता है।

'गोदान' उपन्यास की नायिका धनिया है। वह कृषक होरीराम की पत्नी है। धनिया अपने जीवन में सब कुछ सह सकती है लेकिन अन्याय और विद्रोह नहीं | धनिया भारतीय ग्रामीण नारी का प्रतिनिधि पात्र है। शोषण के अबाध चक्र में पिसता हुआ होरी धनिया के बिना अधूरा ही है। वह जीवन भर परिश्रम करती है, संघर्ष झेलती है, पर जीवन से हार नहीं मानती है। दैन्य उसकी नियति है और विवशता उसकी जिंदगी।

'गोदान' उपन्यास में ग्रामीण और शहरी दोनों प्रकार की जीवन की कथाएँ हैं। होरी के चरित्र में दो गुण दिखाई देते हैं। उसकी शाश्वत गरीबी और परिश्रम करने की दृढ इच्छा शक्ति होरी कृषक वर्ग का प्रतिनिधि पात्र के उसके जीवन की ट्रेजडी हर किसान के जीवन की कथावस्तु को प्रस्तुत करती है।

होरी के मन में गाय लाने की एक मात्र अभिलाषा थी। गाय उसके लिए प्रतिष्ठा की वस्तु थी। होरी ने भोला से गाय उधार ली। गाय के आने से होरी की पत्नी धनिया, पुत्र गोबर दोनों लडकियों सोना और रुपा प्रसन्न हो गई। होरी का भाई शोभा और हीरा उससे द्वेष करने लगे । ईर्ष्यावश हीरा ने गाय को विष खिला दिया और गाय का गोरस पाने की होरी की लालसा धरी की धरी रह गयी । यह गाय उसके लिए विपत्ति लेकर आयी। किसान के जीवन की यह कितनी बड़ी ट्रेजडी है कि वह अपनी छोटी सी अभिलाषा को भी जीवन में पूरा नहीं कर पाता ।

हीरा डर के कारण गाँव छोडकर भाग गया। होरी पर हीरा के परिवार की जिम्मेदारी आयी। इसी बीच गोबर और भोला की विधवा बेटी झुनिया में प्रेम हो गया। माँ-बाप के डर से गोबर झुनिया को वहीं घर पर छोडकर शहर चला गया और वहाँ मजदूरी करने लगा। अतः धनिया ने झुनिया को अपने घर में सहारा दिया। झुनिया गैर बिरादरी की होने के कारण पंचायत ने होरी पर जुर्माना सौ रुपये नकद और तीस मन अनाज भरने को कहा। विवश होकर होरी को अपना घर गिरवी रखना पडा भोला की गाय के रुपये होरी न दे पाया। परिणाम स्वरुप भोला होरी के बेल ले गया | होरी ने कड़ी से कड़ी मेहनत की परंतु उसकी हालत बिगडती गयी। वह चारों ओर से हताश हो गया। होरी ने कर्ज लेकर सोना का विवाह किया लेकिन जमींदार, सरकारी नौकरों और धर्म के पंडितों के द्वारा उसका इतना शोषण हुआ कि उसमें उसका कंकाल मात्र बाकी रह गया | होरी की दरिद्रता दिन ब दिन बढ़ती ही गयी | होरी जब किसान से मजदूर बन जाता है तब उसकी आर्थिक स्थिति अत्यंत हीन होती है। उसी समय रुपा विवाह योग्य होती है। आर्थिक अभाव के कारण होरी मजबूर होकर अपनी बेटी रुपा को एक अधेड उम्र के रामसेवक के हाथ दो सौ रुपये के बदले में बेचने के लिए होरी विवश होता है। यह होरी के जीवन की सबसे बडी हार थी ।

उपन्यास का अंत अत्यंत करुण है। गोबर घर लौट आता है। होरी मजदूरी करता है। एक दिन उसे लू लग गई उसकी जीवन लीला समाप्त हो गई। वहीं महाजन, पंडित और दातादीन कहता है, गोदान करा दो | जिस गाय के लिए वह जीवनभर संघर्ष करता है, पर उसे नहीं मिली | मरने के बाद ब्राम्हण उसी गाय का दान माँगता है। इस वक्त धनिया सुतली बेचकर प्राप्त बीस आने दातादीन के हाथ पर रखकर गो-दान करती है। डॉ. त्रिभुवनसिंह के अनुसार, **"एक ही उपन्यास 'गोदान' के अन्दर जन-जीवन तथा समाज अथवा देश की धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के जितने विविध चित्र लेखक ने समेटकर यथार्थ रुप में चित्रित**

किए हैं, उतने चित्र सम्पूर्ण उपन्यास साहित्य में ढूँढने पर ही मिलेंगे और एक स्थान पर मिलना तो असंभव ही है। 'गोदान' ग्रामीण जीवन के वास्तविक पक्ष का गदयात्मक महाकाव्य है। इस उपन्यास के अंदर प्रेमचन्दजी ने जीवन और जगत के विविध क्षेत्रों का तदवत चित्र अपने जीवन के सम्पूर्ण अनुभवों से पखारकर उतारना चाहा है, और लेखक को वैसी ही सफलता मिली है, यही इस उपन्यास की सबसे बडी यथार्थता है। लेखक ने अपने जीवन की अंतिम रक्त-बूँद तक जो संघर्ष परिस्थितियों के साथ किया था, 'गोदान' उसी की सच्ची कहानी है।" उसका कथन योग्य प्रतीत होता है।

निष्कर्ष रुप में कहा जाता है कि, 'गोदान' होरी की कहानी है, उस होरी की जो जीवन भर मेहनत करता है, अनेक प्रकार के कष्ट सहता है केवल इसके लिए की अपनी मर्यादा की रक्षा हो सके और उसे कोई फल नहीं मिलता | अंत में उसे किसान से मजदूर होना पडता है फिर अपनी मर्यादा की रक्षा नहीं कर पाता । परिणामतः वह तप-तप के अपने जीवन का होम कर देता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. शर्मा रामविलास प्रेमचन्द और उनका युग ११५ १९५२
2. डॉ त्रिभुवनसिंह हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद ९४-९५ १९६८